International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 307-313

BHEL कंपनी के रोकड़ प्रबंधन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शांतनु शर्मा*
डॉ. बासन्ती मैथ्यू**
डॉ एस. के. खटीक***

सार

BHEL कंपनी एक सार्वजनिक नौरत्न कंपनी है। इस कंपनी की रोकड़ प्रबंधन का अध्ययन किया गया है। इस अध्यस्यन में यह निष्कर्ष निकला है कि कंपनी के पास रोकड़ प्रबंध की स्थिति संतोषजनक है क्योंकि रोकड़ से कार्यशील पूंजी की स्थिति एवं रोकड़ से चालू संपत्तियों की स्थिति रोकड़ से कुल संपत्तियों की स्थिति एवं रोकड़ से चालू दायित्यों की स्थिति संतोषजनक है। कंपनी के पास रोकड़ एवं बैंक पर्याप्त मात्रा में है जो कि आसानी से अपने दिन प्रतिदिन के खर्चों का भुगतान आसानी से कर सकती है। यह स्थिति कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही है तथा यह अल्पकालीन शोधन क्षमता की स्थिति को भी सुदृढ़ कर रही है। इस शोध अध्ययन में ली गई परिकल्पनाओं का भी परीक्षण किया गया है जिसमें यह परीक्षण स्टूडेट T & test के माध्यम से किया गया है। जिससे यह सिद्ध हुआ है कि कंपनी के पास कार्यशील पूंजी में रोकड़ का अंशदान सार्थक है। रोकड की राशि कंपनी के पास पर्याप्त है।

शब्दकोशः *रोकड़, चालू संपत्तियॉ, चालू दायित्व, कार्यशील पूंजी, कुल संपत्तियॉ।*

प्रस्तावना

रोकड़ प्रबंध

रोकड़ कोष किसी भी व्यवसाय या संस्था का मूल आधार है। नकद कोष का व्यापार में वही स्थान है जो मानव के शरीर में रक्त का है। रोकड़ कोष ही व्यावसायिक जगत की वह धूरी है जिसके चारों ओर अर्थ–जगत चक्राकर घूमता रहता है।

परिभाषा

जैम्स सी. बैन. हॉर्न – रोकड़ प्रबंध का आशय रोकड़ उपलब्धता तथा किसी व्यर्थ कोष पर ब्याज आय को अधिकतम करने के उद्देश्य से एक फर्म के मुद्राओं के प्रबंधन से है।''

रोकड़ एक ऐसी महत्वपूर्ण चल संपत्ति है जिसके बिना किसी व्यवसाय का सुचारू संचालन करना संभव नहीं हो पाता है। रोकड़ में सर्वाधिक तरलता का गुण होता है। एक व्यायवसायिक संस्था में तरल संपत्तियों में नकद राशि, बैंक में जमा राशि, हस्तस्य चैक, सरकारी प्रतिभूतियॉ में किये गये विनियोग सम्मिलित किये जाते है। एक व्यापारिक संस्थां में रोकड़ का आवागमन निरंतर बना रहता है। रोकड़ अंतबहिर्वाह (Cash Outflow) रोकड़ कम करता है। जबकि रोकड़ प्रवाह (Cash Inflow) इसमें वृद्धि करता है। अर्थात रोकड़ एक गैर अर्जन वाली संपत्ति होती है। अतः आवश्यकता से अधिक रोकड़ का व्यवसाय की लाभदायकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसलिये रोकड़ के प्रबंध का उद्देश्य एक ओर तो नकद स्थिति को संतुलित रखना एवं दूसरी ओर आवश्यकता से अधिक रोकड़ को लाभदायक कार्यों में लगाना है।

---

* शोधार्थी, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।
** शोध निदेशक, विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।
*** प्राध्यापक – वाणिज्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।

इसी प्रकार रोकड़ का प्रबंध कुशलता पूर्वक किया जाना चाहिये। क्योंकि रोकड़ का प्रबंध करना व्यावसायिक प्रबंधकों की एक बड़ी समस्या है। रोकड़ प्रबंध का एक मुख्य उद्देश्य संस्था की तरलता एवं लाभदायकता में वृद्धि करना होता है सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि रोकड़ प्रबंध से आशय व्याववसायिक संस्था के लाभों को अधिकतम करने के लिये तरलता और लाभदायकता में संतुलन स्थापित करना है। रोकड़ कोष न केवल व्यथवसाय को प्रारंभ करने या संचालित करने के लिए आवश्यंक है अपितु भविष्य की आकस्मिकताओं की पूर्ति के लिए भी आवश्यक है।

रोकड़ प्रबंध के मुख्यम रूप से चार पहलू/आयाम होते हैः–

- रोकड़ नियोजन Cash planning
- रोकड़ प्रवाहों का प्रबंधन Managing the cash flow
- अनूकूलतम रोकड़ शेष Optimum cash balance
- अतिरिक्त रोकड़ का विनियोग Investment of execess cash

व्यवसाय को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए आवश्यक है कि वित्तीय प्रबंधन को संस्था के लिए अनूकूलतम नकद कोषों का निर्माण करना होता है। संस्था में आवश्यकता के समय नकदी की कमी न रहे और व्यवसाय में रोकड़ का समुचित प्रवाह बना रहे। जिससे उसका उचित प्रयोग सुनिश्चित हो सके। क्योकि आवश्यकता से अधिक रोकड़ व्यवसाय की लाभदायकता पर विपरीत प्रभाव डालती है। अतः संस्था की तरलता एवं शोधन क्षमता को बनाये रखना आवश्यक है।

BHEL कंपनी का परिचय

भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड BHEL भारत में सार्वजनिक क्षेत्र की नवरत्न कंपनियों में से एक अद्यम है। BHEL विश्व के प्रमुख संयंत्र एवं उपस्कर आपूर्तिकर्ताओं में स्थान रखते हुए भारत से इंजीनियरिंग उत्पादों एवं सेवाओं के बड़े निर्यातकों में से एक है। BHEL की स्थापना को 50 वर्ष से अधिक समय बीत चुका है जिसने भारत में देशी भारी विद्युत उपस्कर को जन्म दिया।

शोध विषय के अध्यचयन का औचित्य

एक निर्माणी कम्पनी जैसे BHEL कंपनी मे रोकड़ का अधिक होना या कम होना दोनों ही स्थिति हानिकारक है। रोकड़ की राशि कम होने से अल्पकालीन शोधन क्षमता प्रभावित होती है और रोकड़ की राशि अधिक होने से रोकड़ व्यवसाय में बेकार पड़ा रहता है। इसलिए रोकड़ की राशि का कम या अधिक होना दोनों स्थिति ही लाभप्रद नहीं है इसलिए व्यवसाय में रोकड़ की राशि आवश्यकता के अनुसार ही होनी चाहिए। इस शोध विषय के अध्ययन में BHEL कंपनी की रोकड़ की राशि, कार्यशील पूँजी एवम चालू संपत्तियों के अनुपात में उचित राशि है या नही इत्यादि तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध पेपर के शीर्षक का चयन किया गया है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

यहॉ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम BHEL कंपनी के रोकड़ प्रबंध का विश्लेषणात्मक अध्यनयन किया जा रहा है इससे पूर्व इसी तरह की अन्य सार्वजनिक या निजी क्षेत्र में कार्यरत उपक्रमों की कार्यशील पूँजी का अध्ययन कर अपने विचार कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किये गये है।

कमल धोटे (2013) ने अपने शोध कार्य में सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी की कार्यशील पूँजी के प्रबंधन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। मुख्य रूप से नाल्कों कंपनी का अध्ययन किया है। यह एक एल्युमिनियम निर्माता कंपनी है, जिसका रोकड़ प्रबंध स्टाक प्रबंध, देनदारियों एवं अप्राप्य प्रबंध एवं ऋण एवं अग्रिम प्रबंध का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। नाल्कों कंपनी के अंतर्गत कार्यशील पूँजी के विभिन्न पहलूओं को ध्यान में रखकर विश्लेषणात्मक अध्ययन कर शोध कार्य पूर्ण किया है।

प्रेमचंद नरवरे (2005) :– ने अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला है कि कंपनी में छोटा परिचालन चक्र होना चाहिए ताकि नकदी रूपांतरण अनावश्यक रूप से बाधित न हो और इसका प्रयोग अल्पावधि में विक्रय योग्य प्रतिभूतियों के क्रय मे कर सकें, और स्टॉक का अधिक समय तक रूके रहना एवं उधार नीतियों की कमियॉ भी कार्यशील पूँजी के प्रबंध को प्रभावित करती है। कार्यशील पूँजी स्टॉक की मात्रा को भी प्रभावित करती है क्योकि स्टॉक का नकदी में रूपांतरण होने में समय लगता है। जिसके कारण अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है। इसलिए कंपनी को अपने स्टॉक का प्रबंध आवश्यकतानुसार करना चाहिए।

जेन्ट्री (1985) :– ने अपने शोध अध्ययन में भारित नकद रूपांतरण चक्र की अवधारण के अंतर्गत समझाया है। कार्यशील पूँजी के अंतर्गत नकदी अर्थात रोकड की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। क्योंकि अन्य चल संपत्तियों का रूपांतरण जब तक नकदी में नही होगा तक तक भुगतान की समस्या बनी रहती है। चालू संपत्ति में देनदारियों, स्टॉक, अल्पकालीन विनियोग रोकड़ को छोडकर अन्यसंपत्ति का नकदी में रूपांतरण करते है। जिससे बाह्य दायित्वों का आसानी से भुगतान किया जा सकें। अतः इन्होंने अपने शोध अध्ययन में नकदी रूपांतरण की अनिवार्यता का विशेष महत्व दिया है।

रश्मि जैन (2008) :– ने अपने शोध अध्ययन में बताया है कि कार्यशील पूँजी उपक्रम की रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करती है अतः इसका प्रबंधन न केवल व्यवसाय में तरलता को समन्वित करता है बल्कि यह लाभदायकता को भी बढ़ाता है कार्यशील पूँजी एक संस्था में रक्त की भॉति कार्य करती है। कार्यशील पूँजी का अधिक होना एवं कम होना दोनों ही हानिप्रद है। इसलिए कार्यशील पूँजी का प्रबंधन व्यवसाय की आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए। यदि कोई कंपनी अपनी कार्यशील पूँजी का प्रबंधन आवश्यकतानुसार करती है। तो कंपनी की लाभदायकता में वृद्धि होती है। जो कि इस बात को दर्शाती है कि कंपनी के पास तरलता विद्यमान है।

शोध विषय के अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध विषय के अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है :–

- रोकड़ की अवधारण का अध्ययन करना।
- कार्यशील पूँजी में रोकड़ की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध विषय के अध्ययन की परिकल्पनाएं

- शोध विषय के अध्ययन की शून्यन परिकल्पना इस प्रकार है। रोकड़ की राशि का कार्यशील पूंजी से सार्थक अंशदान नहीं है।

शोध विषय के अध्ययन की संरचना

- शोध विषय के उद्देश्य की पूर्ति हेतु द्वितीय समंकों का प्रयोग किया गया है। जिसमें कंपनी द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेतन वार्षिक बजट, सांख्यिकी रिपोर्ट एवं इंटरनेट, समाचार पत्रों का एवं सहायक प्रलेखों का प्रयोग किया गया है।

शोध विषय के अध्ययन की सीमाएं

शोध विषय के अध्ययन की सीमाएं इस प्रकार है :

- यह शोध कार्य द्वितीय संमकों पर आधारित है।
- पर्याप्त शोध साहित्य का अभाव है।
- शोध विषय के अध्ययन के आधार पर तालिकाओं का समूहीकरण एवं वर्गीकरण किया गया है।
- इस शोध विषय के अध्ययन में सीमित अवधि ली गई है।

रोकड़ प्रबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन

BHEL कंपनी के रोकड़ प्रबंधन का विश्लेषणात्मक अध्ययन इस प्रकार है कि रोकड़ प्रबंध कपंनी विश्लेषण करने हेतु अनुपात विधि का उपयोग किया गया है। जिसके अन्तंर्गत निम्नलिखित अनुपातों के विश्लेषण के आधार पर रोकड़ की स्थिति का अध्ययन किया गया है।

- रोकड़ से चालू सम्पत्तियों का अनुपात
- रोकड़ से कार्यशील पूँजी का अनुपात
- रोकड़ से कुल सम्पत्तियों का अनुपात
- रोकड़ से चालू दायित्वों का अनुपात

उपरोक्त अनुपात विश्लेषण के आधार पर रोकड़ प्रबंध का अध्ययन किया जा रहा है।

तालिका 1 में रोकड़ एवं चालू संपत्तियों के मध्य अनुपात को दर्शाया गया है।

तालिका 1: Cash to Current Assets

(रू. करोड़ में)

Year	Cash	Current Assets	Ratio
13–14	12019.97	52395.03	0.2294
14–15	9948.90	49040.93	0.2028
15–16	10087.20	45139.91	0.2234
16–17	10493.55	42903.96	0.2445
17–18	11291.59	43193.45	0.2614
18–19	7503.54	38380.91	0.1955
19–20	6418.59	32711.18	0.1962
20–21	6701.45	28343.36	0.2364
21–22	7153.69	27861.98	0.2567
22–23	6642.58	30082.28	0.2208

स्त्रोत :– (BHEL कंपनी का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2013–14 से 2022–23 तक)

निर्वचन

तालिका 1 में BHEL कंपनी के रोकड़ एवं चालू संपत्तियों के मध्य अनुपात को दर्शाया गया है जो कि वर्ष 2013–14 से वर्ष 2022–23 तक की अवधि में चालू संपत्तियों की तुलना में रोकड़ की स्थिति दर्शा रहा है। अध्ययन अवधि के दौरान चालू संपत्ति की तुलना में रोकड़ की स्थिति में बहुत अधिक उतार–चढ़ाव देखा गया है। क्योंकि वर्ष 2013–14 में यह अनुपात 0.2294 था जो कि अगले वर्ष 14–15 में घटकर 0.2028 हो गया पुनः वर्ष 15–16 में वृद्धि कर 0.2234 के स्तर पर पहुँच गया। अगले वर्ष 16–17 में यह वृद्धि कर 0.2445 तक पहुँच गया। यह वर्ष 17–18 में सर्वाधिक 0.2614 पर था। किंतु वर्ष 18–19 में यह घटकर 0.1955 रह गया। किंतु मामूली सी वृद्धि के साथ यह अनुपात वर्ष 19–20 में 0.1962 पर था। किंतु अगले दो वर्षों में क्रमशः 20–21 एवं 21–22 में यह अनुपात 0.2364 एवं 0.2567 पर वृद्धि के साथ देखा गया। अंतिम वर्ष 2022–23 में घटकर यह 0.2208 के स्तर तक आ गया।

तालिका 2 में रोकड़ एवं कार्यशील पूँजी के मध्य अनुपात बताया गया है।

तालिका 2: Cash to Working Capital

(रू.करोड़ में)

Year	Cash	Working Capital	Ratio
13–14	12019.97	26398.84	0.455
14–15	9948.90	26223.81	0.397
15–16	10087.20	24399.28	0.413
16–17	10493.55	22761.33	0.461
17–18	11291.59	20982	0.538
18–19	7503.54	15325.75	0.489
19–20	6418.59	10102.27	0.635
20–21	6701.45	7983.46	0.839
21–22	7153.69	6490.836	1.1021
22–23	6642.58	6730.83	0.986

स्त्रोत :– (BHEL कंपनी का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2013–14 से 2022–23 तक)

निर्वचन

तालिका (2) में रोकड़ एवं कार्यशील पूँजी के मध्य अनुपात बतलाया गया है। जो कि अध्ययन अवधि 2013–14 से 2022–23 के दौरान कार्यशील पूँजी में रोकड़ की स्थितियों में अधिक उतार चढ़ाव दिखाई दे रहा है। वर्ष 2013–14 में यह अनुपात 0.455 है अगले वर्ष 2014–15 में यह घटकर 0.397 देखा गया। आगे के क्रमशः तीन वर्षों में पुनः वृद्धि का दौर देखा गया जो कि वर्ष 15–16 में 0.413, वर्ष 16–17 में 0.461 तथा वर्ष 17–18 में 0.538 हो गया। वर्ष 18–19 में मामूली सी गिरावट के साथ यह अनुपात 0.489 रहा। किंतु आगामी वर्षों में लगातार वृद्धि के साथ यह अनुपात वर्ष 19–20 में 0.635 20–21 में 0.839 21–22 में 1.1021 देखा गया है। जो कि वर्ष 21–22 में कार्यशील पूँजी में रोकड़ का सर्वाधिक अनुपात है एवं अंतिम वर्ष 22–23 में अनुपात गिरकर 0.986 रहा।

तालिका 3 में रोकड़ एवं कुल संपत्तियों के मध्य अनुपात दर्शाया गया है।

तालिका 3: Cash to Total Assets

(रू.करोड़ में)

Year	Cash	Total Assets	Ratio
13–14	12019.97	75242.57	0.159
14–15	9948.90	70888.68	0.140
15–16	10087.20	65320.46	0.154
16–17	10493.55	61347.45	0.171
17–18	11291.59	63544.68	0.177
18–19	7503.54	63934.31	0.117
19–20	6418.59	59748.56	0.107
20–21	6701.45	55240.21	0.121
21–22	7153.69	56243.76	0.127
22–23	6642.58	59369.79	0.111

स्त्रोतः– (BHEL कंपनी का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2013–14 से 2022–23 तक)

निर्वचन

तालिका 3 में रोकड़ एवं स्थाई संपत्तियों के मध्य अनुपात दर्शाया गया है जो वर्ष 2013–14 से 2022–23 तक की अवधि में स्थाई संपत्ति की तुलना में रोकड़ की स्थिति को बतला रहा है अध्ययन अवधि के दौरान शुरूआती वर्षों में यह अनुपात अधिक दिखाई दिया है। किंतु अंतिम वर्षों में इस अनुपात में उतार–चढ़ाव की स्थिति पाई गई है। वर्ष 2013–14 में यह अनुपात 0.159 रहा जो घटकर वर्ष 2014–15 में 0.140 हो गया। अलगे वर्षों में यह बढ़कर क्रमशः वर्ष 15–16 में 0.154 वर्ष 16–17 में 0.171 एवं वर्ष 17–18 में 0.177 देखा गया। वर्ष 17–18 में यह अनुपात सर्वाधिक था। अगले वर्ष 18–19 में यह अनुपात घटकर 0.117 रहा। वर्ष 2019–20 में और कभी के साथ यह अनुपात 0.107 देखा गया। वर्ष 20–21 में मामूली सी वृद्धि के साथ यह अनुपात 0.127 हो गया। वर्ष 21–22 में 0.121 हो गया। वर्ष 22–23 में फिर कभी के साथ यह अनुपात 0.111 पर आ गया।

तालिका 4 में रोकड़ एवं चालू दायित्वों के मध्य अनुपात दर्शाया गया है।

तलिका 4: Cash to Current Liabilities

(रू.करोड़ में)

Year	Cash	Current liabilities	Ratio
13–14	12019.97	25996.19	0.462
14–15	9948.90	22817.12	0.436
15–16	10087.20	20740.65	0.486

16–17	10493.55	20142.63	0.520
17–18	11291.59	22211.45	0.508
18–19	7503.54	23055.18	0.325
19–20	6418.59	22608.48	0.283
20–21	6701.45	20359.90	0.329
21–22	7153.69	21371.15	0.334
22–23	6642.58	23351.45	0.284

स्त्रोत :– (BHEL कंपनी का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2013–14 से 2022–23 तक)

निर्वचन

तालिका 4 में रोकड़ एवं चालू दायित्वों के मध्य अनुपात दर्शाया गया है। जो कि वर्ष 2013–14 से वर्ष 2022–23 तक की अवधि के दौरान चालू दायित्वों की तुलना में रोकड़ की स्थिति को दर्शा रहा है। प्रारंभिक वर्ष 2013–14 में यह अनुपात 0.462 था किंतु वर्ष 2014–15 में यह घटकर 0.436 के स्तर पर जा पहुँचा। लेकिन आग्रामी वर्ष में बढ़त का दौर दिखाई दिया और यह अनुपात वर्ष 15–16 में 0.486 वर्ष 16–17 में 0.520 एवं वर्ष 17–18 में 0.508 रहा। पुनः अगले वर्ष में गिरावट के साथ यह अनुपात वर्ष 18–19 में 0.325 एवं 19–20 में 0. 283 के स्तर पर रहा। वर्ष 20–21 में छलांग लगाकर यह अनुपात 0.329 पर देखा गया। वर्ष 21–22 में मामूली वृद्धि के साथ यह अनुपात 0.334 के स्तर पर रहा। किंतु वर्ष 22–23 में गिरावट के साथ यह अनुपात 0.284 पर पहुँच गया।

शोध विषय के अध्ययन मे ली गई शून्य परिकल्पना का परीक्षण :– इस प्रकार किया गया है कि रोकड़ की राशि का अंशदान कार्यशील पूँजी की राशि के सार्थक योगदान है।

r = 0-52

$$t = \frac{r}{\sqrt{1-r2}} \times \sqrt{n-2}$$

t = 2-34

t005 = 1-86

t >t005

शोध विषय के अध्ययन की परिकल्पना के परीक्षण उपरांत गणना की गई अंसनम ज = 2.34 है जबकि सारणीयन अंसनम (मूल्य) ज 005=1.86 है। अतः शोध विषय के अध्ययन में ली गई परिकल्पना अस्वीकार है अर्थात् रोकड़ का कार्यशील पूँजी में अंशदान सार्थक है।

निष्कर्ष

शोध विषय के अध्ययन के निर्वचन एवं विश्लेषण के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि चालू संपत्तियों में रोकड़ प्रबंधन की स्थिति अच्छी है। जो कि अध्ययन अवधि के दौरान लगभग रोकड़ की स्थिति चालू संपत्ति 20 प्रतिशत से अधिक है। कंपनी आसानी से अपने खर्चों का भुगतान कर सकती है और यह सकारात्मक प्रभाव डाल रही है। कंपनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता भी अच्छी है।

BHEL लि. की कार्यशील पूँजी में रोकड़ की स्थिति भी संतोषजनक है। अध्ययन अवधि के दौरान रोकड़ एवं बैक की कार्यशील पूँजी की तुलना में स्थिति लगभग 6 प्रतिशत से अधिक है। जो कि निर्माणी कंपनी में होना अनिवार्य है। यह स्थिति कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। जिससे कंपनी की साख एवं ख्याति तथा मार्केट की वेल्थ में वृद्धि होती है।

BHEL की कुल संपत्तियों से रोकड़ की स्थिति भी संतोषजनक है। यद्यपि रोकड़ कुल संपत्ति की तुलना में लगभग 15 प्रतिशत से अधिक है। कुल संपत्ति की तुलना में रोकड़ का अधिक होना ही लाभदायक नही है।

क्योंकि रोकड़ अधिक होने से वेल्थ कोष बेकार पड़े रहते है। अर्थात रोकड़ का अधिक उपयोग न होने के कारण बेकार पड़ा रहता है। अतः यह कंपनी की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

BHEL कंपनी की चालू दायित्वों से रोकड़ की स्थिति संतोषजनक है क्योंकि चालू दायित्वों के भुगतान करने के लिए कंपनी के पास पर्याप्त मात्रा लगभग 40 प्रतिशत रोकड़ है जो कि पर्याप्त है। यह कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही है। कंपनी आसानी से अपने दैनिक खर्चों का भुगतान करने में सक्षम है। अतः इसकी यह स्थिति भी संतोषजनक है एवं यह व्यवसाय पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

सुझाव

- BHEL कंपनी की चालू संपत्तियों से रोकड़ की वर्तमान स्थिति को बनाए रखना चाहिए। जिससे कि कंपनी की आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।
- BHEL की कार्यशील पूँजी से रोकड़ की स्थिति को भी भविष्य में बनाए रखना चाहिए। यह एक निर्माणी के होने के कारण कार्यशील पूँजी कम से कम 6 प्रतिशत होना अनिवार्य है। जो कि कंपनी के पास है।
- BHEL कंपनी की कुल संपत्तियों में रोकड़ की स्थिति की संतोषजनक है परंतु कुल संपत्ति में रोकड़ का अनुपात लगभग 15 प्रतिशत से अधिक है ऐसी स्थिति में कंपनी को कुल संपत्तियों में और अधिक वृद्धि करनी चाहिए। जिससे रोकड़ का अधिकतम उपयोग किया जा सके।
- BHEL कंपनी की चालू दायित्वों में रोकड़ की स्थिति संतोषजनक है। अतः इस स्थिति को भविष्य में बनाए रखना चाहिए जिससे कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल मुकेश (2020) वित्तीय प्रबंध कैलाश बुक हाउस, भोपाल।
2. गुप्ता एस जी (2008) वित्तीय प्रबंध साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा।
3. अग्रवाल एम डी (2017) वित्तीय प्रबंधन कॉलेज बुक हाऊस जयपुर।
4. शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश (2010) रिसर्च मेथेडॉलॉजी पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
5. भारल शैलेन्द्र कुमार शुक्ला राजेश (2005) वित्तीय प्रबंधन, राम प्रसाद एड सन्स भोपाल।
6. कुलश्रेष्ठ एवम उपाध्याय (2018) वित्तीय प्रबंधन साहित्य भवन आगरा।

Website

7. https://hi.investing.com
8. BHEL : hi.wilipipedia.org
9. www.google.co.in
10. Annual Report (2013-2014 to 2022-2023)